वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

सोमवार,पौष कृष्ण पक्ष,त्रयोदशी, कलियुग वर्ष ५१२२ (११ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

१२ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-12012021

देव स्तुति

सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं,
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं,
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥

अर्थ : जिनके चरणकमल सदैव मनमें निवास करते हैं, जिनके घुंघराले केश हैं, जो वैजयन्तीकी उज्ज्वल माला धारण करते हैं, उन नन्दबाबाके पुत्रको नमस्कार है। जो समस्त दोषोंका शमन करते हैं तथा समस्त लोकोंके पालनहार हैं, जो गोपजनके मनमें बसे हैं और नन्द बाबाकी लालसा है, उन्हें नमस्कार है।

शास्त्रवचन

सर्वेषांमपि पुण्यानां सर्वेषां श्रेयसामपि।
सर्वेषांमपि यज्ञानां जपयज्ञः परः स्मृतः ॥

अर्थ : स्कन्दपुराणके अनुसार नाम महिमा : समस्त पुण्यों, श्रेयके सम्पूर्ण साधनों और समस्त यज्ञोंमें जपयज्ञको ही सर्वोत्तम माना गया है।

****

किं करिष्यसि सांख्येन किं योगैर्नरनायक।
मुक्तिमिच्छसि राजेन्द्र कुरु गोविन्द कीर्तनम् ॥

अर्थ : गरुडपुराणानुसार नाम महिमा : नरेन्द्र, सांख्य और योगका अनुष्ठान करके क्या करोगे ? राजेन्द्र ! यदि मुक्ति चाहते हो तो गोविन्दका कीर्तन करो !

धर्मधारा

१. हिन्दू राष्ट्र आवश्यक क्यों ? (भाग-५)

हिन्दू बहुल देशके विद्यालयोंमें हिन्दू धर्मका ज्ञान नहीं दिया जाता है। यदि ऐसा प्रयास कहींपर केन्द्रीय स्तरपर हो तो उसे साम्प्रदायिक कहकर न्यायालयतक इस घटनाको पहुंचा दिया जाता है। केन्द्रीय विद्यालयमें प्रार्थनाको लेकर चल रहा अभियोग, इस सम्बन्धमें एक उदाहरण मात्र है; किन्तु कुकुरमुत्ते समान फैले हुए 'मदरसों' एवं 'कान्वेंट' विद्यालयोंमें इस्लाम और ईसाईयतकी घुट्टी पिलानेका शासनप्रदत्त अधिकार ही नहीं दिया जाता है; अपितु उन्हें संरक्षण तथा आर्थिक सहायता दी जाती है।

ध्यान रहे, अभी तो मात्र ८ लाख हिन्दू प्रतिवर्ष अहिन्दू पन्थोंमें धर्मान्तरित हो रहे हैं, यदि यही स्थिति रही तो वह दिन

दूर नहीं होगा, जब सम्पूर्ण भारतसे यह शाश्वत और दैवी धर्म लुप्त हो जाएगा, जैसे अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश इत्यादि देशोंमें हो चुका है।

इसे रोकने हेतु हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना अनिवार्य है एवं हिन्दू राष्ट्रमें बाल्यकालसे ही हिन्दू धर्म, हिन्दू धर्मग्रन्थों एवं संस्कृत भाषाका ज्ञान दिया जाएगा और इसे सभीके लिए अनिवार्य भी किया जाएगा।

****

२. विकलांगोंको तीव्र कष्ट होनेके कारण

धर्मप्रसारके मध्य एक बात ध्यानमें आई कि जो भी व्यक्ति विकलांग (जिन्हें आजकल दिव्यांग कहा जा रहा है) या भिन्न प्रकारके मनोरोगोंसे ग्रस्त होते हैं, उन्हें अमावस्या या पूर्णिमाके एक-दो दिवस पूर्वसे भिन्न प्रकारके तीव्र कष्ट होने लगते हैं।

वस्तुतः वर्तमान कालमें जन्मजात शारीरिक कष्ट (अपंगता) या मानसिक कष्ट अधिकांशतः अनिष्ट शक्तियोंके कारण होते हैं। ऐसे बच्चोंपर गर्भकालमें ही अनिष्ट शक्तियां आक्रमणकर उनके स्थूल एवं सूक्ष्म देहमें अपना स्थान बना लेती हैं; इसलिए ऐसे लोग यदि योग्य साधना न करें तो उन्हें अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट आजीवन रहता है एवं अमावस्या व पूर्णिमाके दिवस उनके कष्ट तीव्र हो जाते हैं। ऐसे लोगोंके परिजनको इन विकलांगोके कारण भी बहुत अधिक मानसिक कष्ट होता है। अनेक बार उनमें वास करनेवाली अनिष्ट शक्तियां प्रकट हो जाती हैं और ऐसे व्यक्तिके कृत्योंको वशमें करना भी कठिन हो जाता है। आपने देखा होगा ऐसे लोग यदि हिंसक हो जाएं तो उन्हें बांधकर या एकाकी रखा जाता है।

ऐसे लोगोंके परिजनको योग्य साधना करना चाहिए, यही

इन समस्याओंको न्यून करनेका एकमात्र उपाय है।

****

३. हमारे मन एवं बुद्धिपर जितना अल्प सूक्ष्म काला आवरण होता है एवं मनोलय व बुद्धिलय जितना अधिक हो चुका होता है, उतनी ही अधिक भविष्यकी या सूक्ष्मकी जानकारी हमें प्राप्त होती है।

कुछ साधक कहते हैं कि मुझे कुछ बातोंका पूर्वाभास हो जाता है। यह कैसे होता है ? यह मुझे समझमें नहीं आता है। यदि किसीकी इस जन्मकी या पूर्वजन्मकी साधना प्रगल्भ हो तो ऐसा होना सहज बात है। साधना सातत्यसे या भावसे करनेसे मनोलय व बुद्धिलय होता है, इससे सूक्ष्मका ज्ञान चाहे वह भूतकालका हो या भविष्यकालका, वह होने लगता है।

वाल्मीकि ऋषिने प्रभु श्रीरामकी जीवनगाथा रामायण, अपनी सूक्ष्म इन्द्रियोंकी सहायतासे ही लिखी है। उन्हें तो श्रीराम और माता सीता माताके अयोध्या आगमन उपरान्त वियोगके विषयमें भी ज्ञात था।

पूर्वकालमें लोग सात्त्विक होते थे; इसलिए उनकी सूक्ष्म इन्द्रियां सहज ही जाग्रत होती थीं; इसलिए उन्हें भी अनेक बातोंका पूर्वाभास हो जाता था।

आजकल कुछ लोगोंको सूक्ष्म जगतकी अनिष्ट शक्तियोंका तीव्र कष्ट होता है एवं उन्हें भी कुछ बातोंका पूर्वाभास हो जाता है, जबकि वे बहुत अधिक साधना नहीं करते हैं। वस्तुतः उन्हें यह ज्ञान उनके शरीरमें वास करनेवाली अनिष्ट शक्तियां देती हैं जो उनके मन एवं बुद्धिको भी अपने वशमें कर लेती हैं; इसलिए उन्हें लगता है कि सूक्ष्म विषयक ज्ञान उन्हें मिल रहा है या हो रहा है।

ऐसे लोगोंका अहं भी सामान्य व्यक्तिकी अपेक्षा अधिक

होता है । और वे मनानुसार अर्थात उनके मनको जो अच्छा लगता है, वैसा ही वर्तन करते हैं । यदि आपके साथ भी ऐसा है तो सतर्क हो जाएं और या तो अध्यात्म शास्त्र अनुसार साधना करें या किसी सन्तके मार्गदर्शनमें साधना करें एवं सात्त्विक रहें !

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसङ्ग

स्वर्गकी प्राप्ति

एक बार स्वर्गमें बहुत सारे लोग एक साथ पहुंचे और उनके मध्य स्वर्गके आसनपर बैठनेको लेकर विवाद होने लगा । तभी धर्मराजने कहा, "आप सब लोग इस प्रकार विवाद न करें ! आप सब लोग अपने जीवनमें आपने जितने भी अच्छे-बुरे कार्य किए हैं, उन सबका विवरण इस प्रपत्रपर लिखें ! जो कोई भी धर्मकी इस कसौटीपर श्रेष्ठ होगा, उसे ही स्वर्गका सिंहासन दिया जाएगा ।" अब क्या होना था, सभी लोगोंने प्रपत्र भरकर धर्मराजके आगे रख दिया ।

प्रपत्रोंका परीक्षण किया गया । सभीमें सद्कार्योंका उल्लेख था । किसीने प्रपत्रमें लिखा था, "मैंने जीवनभर तप किया है । किसीने लिखा था, "मैंने जीवनभर व्रत उपवास किया है और जीवनभर दान दिया है ।"

धर्मराजने अपनी दिव्यदृष्टि डाली तो पाया कि सब व्यर्थ था ! इतनेमें उन्हें एक प्रपत्र मिला उसमें सभी प्रविष्टियां कुछ अधूरीसी थीं; परन्तु अन्तमें लिखा था, "मैं तो भूलसे स्वर्ग आ गया हूं, मुझे जाना तो नरकमें था । मैंने ऐसा कोई भी कार्य नहीं किया है कि मैं स्वर्ग आऊं । मैं तो नरकमें जाकर दीन-दुखियोंकी सेवा करना चाहता था ।" धर्मराजने मात्र इसी

व्यक्तिको स्वर्गका अधिकारी माना।

परन्तु शेष सभी लोग इस बातका विरोध करने लगे; क्योंकि उन्होंने अपने जीवनमें श्रेष्ठ कार्य किए थे। उन सबको पूर्ण विश्वास था कि उन्हें स्वर्गमें स्थान मिलनेवाला है; परन्तु इसके ठीक विपरीत हुआ। उन्होंने धर्मराजसे इसका कारण जाननेके उद्देश्यसे पुछा, "हे धर्मराज ! इस व्यक्तिने जीवनभर क्या किया?, यह हमें नहीं जानना; परन्तु कृपया हमें यह बताएं कि हम पृथ्वीलोकपर, स्वर्गकी प्राप्तिकी आशा मनमें लिए इतने अच्छे कर्म किए जा रहे थे, परोपकार ही जीवनभर किए; परन्तु हमें स्वर्ग नहीं मिल रहा है, ये तो हमारे साथ अन्याय है।"

धर्मराज हंसते हुए बोले, "बात कर्मोंकी नहीं है; अपितु कर्मफलकी इच्छाकी है। यदि आप सब निःस्वार्थ भावसे बिना किसी प्रलोभनके दूसरोंकी सेवा करते, बिना फलकी चिन्ता किए, केवल अपना कर्म करते तो आज स्वर्गकी प्राप्ति आप सबने की होती। इस व्यक्तिने बिना किसी स्वार्थके दूसरोंकी सेवाकी और बिना स्वर्गकी लालसा लिए यह अपना कर्म करता रहा, इसी कारण आज इसे स्वर्गकी प्राप्ति हुई है।"

सभी व्यक्तियोंको धर्मराजकी बातें समझ आ चुकी थीं और आज उन्हें स्वर्गकी प्राप्ति तो नहीं; परन्तु बहुत बडे ज्ञानकी प्राप्ति हो चुकी थी।

घरका वैद्य

अजवाइन (भाग-१)

अजवाइनको हमने प्रतिदिन ही घरोंमें मसालेके रूपमें उपयोग करते हुए देखा है; परन्तु अजवाइन एक औषधि है; इसलिए आपको अजवाइनके गुण, लाभ और हानिकी पूरी जानकारी होनी चाहिए। अजवाइनके लाभ विशेष रूपसे पाचन

या पेट सम्बन्धी रोगोंको दूर करनेके लिए जाने जाते हैं। अजवाइनका वैज्ञानिक नाम 'ट्रेकिस्पर्मम-अम्मी' (Trachyspermum ammi) है। अजवाइनका पौधा छोटा झाडीकी भांति दिखाई देता है जो हरे रंगका होता है। भिन्न-भिन्न स्थानोंपर अजवाइनको भिन्न नामोंसे जाना जाता है, जैसे 'विशप'के खरपतवार, 'थाइमोल'के बीज या अजवाइन, तेलुगुमें इसे वामु, तमिलमें ओमम, मलयालममें अयोधमकम और कन्नडमें ओम कलुगलु आदि नामोंसे जाना जाता है। अजवाइनके बीज आकारमें छोटे और हलके हरे रंगके होते हैं जो भोजनका स्वाद बढाने और स्वास्थ्यके लिए अच्छे होते हैं। इस पौधेकी पत्तियां पंखके समान होती हैं।

अजवाइनकी प्रकृति : अजवाइनकी प्रकृति उष्ण होती है, जिस कारण अजवाइनका स्वाद तीक्ष्ण होता है। इन्हीं गुणोंके कारण ही अजवाइनका उपयोग विशेष रूपसे 'सर्दी'से बचने और गर्भावस्थाके मध्य महिलाओंके लिए औषधिके रूपमें किया जाता है।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

'२०००+५० मुसलमानोंके हत्यारे 'पीएम' मोदीका 'ट्विटर हैंडल सस्पेंड' करो', कट्टरपन्थी इस्लामी और वामपन्थियोंने चलाया 'ट्रेंड'

अमेरिकामें जिस प्रकारसे फेसबुक 'ट्विटर' और गूगलने वहांके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पके विरुद्ध कार्यवाही की है, उसके पश्चातसे ही वामपन्थियोंके एक पक्षमें उत्साह है। अब वो चाहते हैं कि 'ट्विटर' इसके पश्चात भारतके प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीके 'हैंडल'को सदैवके लिए प्रतिबन्धित कर दे। ऑस्ट्रेलियाके लेखक सीजे वर्लमन 'CJ Werleman'से लेकर

प्रोफेसर खालिद बेयदौन जैसोंने 'मोदी नेक्स्ट' ट्वीटके साथ 'जैक'से पीएम मोदीका 'हैंडल सस्पेंड' करनेकी मांग की।

विश्व भरमें मुसलमानोंपर तथाकथित अत्याचारको लेकर स्वर मुखरित करनेका 'दावा' करनेवाले सीजे वर्लमनने लिखा कि नरेन्द्र मोदीको 'ट्विटर'से प्रतिबन्धित करना एकदम वैध है। उन्होंने कहा कि २००२ में मोदीने ही गुजरातमें २००० मुसलमानोंके नरसंहारके लिए भडकाया था। साथ ही देहलीमें २०१९ में ५० मुसलमिनोंकी हत्या'का आरोपभी उनपर मढा। उन्होंने प्रधानमन्त्री मोदीपर भारतीय समाजको कट्टरवादी बनानेका आरोप लगाया।

इसी प्रकार कई मुसलमानोंने भी ऐसी ही टिप्पणियां की हैं।

भाजपा कितना भी सबका साथ, सबका विकासकी बातें करे; परन्तु धर्मान्ध भाजपाको स्वीकार करेगा, यह लगभग असम्भव ही है; अतः समय रहते भाजपा जागे और हिन्दुओंपर ध्यान केन्द्रित करे, इसीमें उसकी भलाई है।

****

तृणमूल सांसदने की देवी सीतापर अपमानजनक टिप्पणी

तृणमूलके सांसद कल्याण बनर्जीने देवी सीताके विरुद्ध अपमानजनक भाषाका प्रयोग किया है। कल्याण बनर्जीने बंगालमें एक चुनावी सभाको सम्बोधित करते हुए कहा, "सीता रामके पास जाकर बोली कि मेरा सौभाग्य था कि रावणने मेरा हरण किया। यदि तुम्हारे भगवाधारी चेलोंने मेरा हरण किया होता, तो मेरी स्थिति उत्तर प्रदेशके हाथरस जैसी होती !" इसका 'वीडियो' 'सोशल मीडिया'पर प्रसारित हो गया, इसके पश्चात भाजपा 'आईटी सेल'के प्रमुख अमित मालवीयने

मुख्यमन्त्री ममता बनर्जीसे तुष्टीकरणको लेकर प्रश्न किया । उन्होंने पूछा कि क्या हिन्दुओंकी भावनाओंको ठेस पहुंचाकर ही ममता दीदी तुष्टीकरणकी राजनीति करना चाहती हैं ?

भाजपा नेता और मेघालयके राज्यपाल तथागत रॉयने भी कल्याण बनर्जीपर देवी सीताके विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणी करनेका आरोप लगाते हुए 'वीडियो' पोस्ट किया ।

भाजपा आईटी विभागने यह कहा और भाजपा प्रमुखने वह कहा, इनका कहना ठीक है; क्योंकि इन्हें चुनावमें विजयी होना है; परन्तु जिनके बोलने व विरोध करनेसे वास्तविक अन्तर पडना चाहिए था, वे समस्त हिन्दू मौन रहे ! यह समस्त हिन्दू समाज, जो भगवान श्रीराम व माता सीताके प्रति आस्था प्रकट करता है, उनकी आस्था इसी प्रकरणसे प्रकट हो जाती है कि कोई उनके देवोंका अपमान करे और वे मौन रहते हैं ! हिन्दुओ, यदि मौन ही रहना है, तो अपने पतनके आप स्वयं उतरदायी होंगे । (१०.०१.२०२१)

****

अखिलेश शासनने उच्च अधिकारियोंको बनाया था 'चपरासी' और 'चौकीदार', उन्हें मुख्यमन्त्री योगीने अपने मूल पदोंपर भेजा

उत्तर प्रदेशके पूर्व शासनने प्रदेशके सूचना विभागमें सेवारत चार उच्चतर अधिकारियोंकी पदावनति करके, उन्हें भृत्य (चपरासी), द्वारपाल (चौकीदार), चलचित्र प्रचालक (सिनेमा ऑपरेटर) और प्रचार सहायक पदोंपर बैठा दिया था । उस समय प्रदेशमें अखिलेश यादवका शासन था और उसके समाजवादी दलने इन अधिकारियों पदावनत किया था, जो

नियमोंके ठीक विपरीत ही था।

उत्तर प्रदेशके वर्तमान शासनद्वारा उन्हें पुनः अपने उच्चतर पदोंपर विराजमान कर दिया गया है। उन चारोंकी पदोन्नति करके, उन्हें पुनः उच्च अधिकारी बना दिया गया है। इसके साथ ही भृत्यसे 'तहसीलदार' बने हुए नरसिंहको पुनः चाकरके स्थलपर भेज दिया गया है।

इसके अतिरिक्त मथुराके सूचना अधिकारी पदपर विनोद कुमार शर्माको भी उच्च पद दिया था, अब उसे पुनः चलचित्र प्रचालक और प्रचारकके सहायक पदपर भेज दिया गया है। इसी प्रकार दो अन्य अधिकारियोंको भी द्वारपाल और 'सिनेमा ऑपरेटर'के कार्यपर लौटना पडा। इन सभी कर्मचारियोंको आदेश दिया गया है कि वे अपना पद ग्रहण करनेके पश्चात अपनी सूचना और विवरण सूचना मुख्यालयको दें।

मुख्यमन्त्री योगीने यह आदर्श उदाहरण दिया है और राज्यमें भ्रष्टाचारके विरुद्ध अपनी कठोर नीति अपनाई है, वह अति प्रशंसनीय है। इसी प्रकार दूसरे राज्य भी जब निष्कपटतासे राज्य संचालित करें तो ही देशसे भ्रष्टाचार समाप्त करनेमें सहायता मिलेगी। (१०.०१.२०२१)

****

गुरुग्राममें ३ वर्ष पूर्व मारे गए छात्रकी हत्याके छद्म आरोपोंसे मुक्त हुए 'बस कंडक्टर' अशोक कुमार जी रहे हैं नारकीय जीवन

गुरुग्राममें तीन वर्ष पूर्व 'रेयान पब्लिक' विद्यालयमें हुई सात वर्षके बालक प्रिंसकी हत्याका प्रकरण अभी भी सभीके मस्तिष्कमें है। उस समय इस प्रकरणने विद्यालय प्रशासनपर

अनेक प्रश्न खडे कर दिए थे । वर्तमानमें इस प्रकरणकी जांच 'सीबीआई' कर रही है । 'सीबीआई'ने इस प्रकरणमें बताया है कि पुलिस अधिकारियोंने 'बस कंडक्टर' अशोक कुमारको उस समय इस प्रकरणमें बलपूर्वक फंसाया था । अशोक कुमार आजकी तिथिमें कारावाससे तो बाहर है; परन्तु वे व उनका परिवार उस प्रकरणकी पीडा अभी भी भुगत रहा है तथा नारकीय जीवन व्यतीत करने को विवश है । समाचारके अनुसार पीडित अशोक कुमारके कारावाससे बाहर आने के पश्चात उसे कहीं कार्य नहीं मिल रहा जिसके कारण परिवारके समक्ष आर्थिक संकट खडा हो गया है । वहीं उसके बच्चोंको भी विद्यालयसे निष्कासित कर दिया गया है । 'सीबीआई'ने बताया कि उसको पुलिस अभिरक्षामेंमें अत्यधिक पीटा गया कि वह किसी भी शारीरिक श्रमको करने हेतु अब असमर्थ है तथा शारीरिक वेदनासे दुखी रहता है । स्थानीय लोगों व उसकी बहनकी सहायता से ही वह अपना जीवन यापन कर रहा है । उल्लेखनीय है कि 'सीबीआई'ने इस प्रकरणमें पंचकूला न्यायालयमें आरोपपत्र प्रविष्ट किया है तथा इसीमें ४ पुलिस अधिकारियोंको भी अशोकको फंसाने व छद्म साक्ष्य प्रस्तुत करनेके लिए आरोपी बताया है ।

यह समाचार आजकी न्याय व्यवस्थापर बडा प्रश्न खडा करता है । अब आने वाले हिन्दूराष्ट्रमें ही यह न्याय व्यवस्था सुचारू हो सकेगी और सभीको यथासमय न्याय प्राप्त होगा ।

'बुर्काधारी महिलाओंने देहली उपद्रवमें किया था पुलिसपर आक्रमण', न्यायालयने आरोपी तबस्सुमको प्रतिभूति देनेसे किया अस्वीकार

देहलीके एक न्यायालयने गत वर्ष देहलीमे हिन्दू विरोधी उपद्रवके अन्तराल 'हेड कांस्टेबल' रतन लालकी हत्याके प्रकरणमें एक आरोपीद्वारा प्रविष्ट प्रतिभूति (जमानत) याचिकाको शुक्रवार, जनवरी ०८, २०२२ को अस्वीकृत कर दिया।

ब्यौरेके अनुसार, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विनोद यादवने देहलीके चांद बाग क्षेत्रकी निवासी तबस्सुमकी 'जमानत' याचिकाको यह कहते हुए अस्वीकृत कर दिया कि उसके 'कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स'से ज्ञात हुआ है कि वह देहली उपद्रवके कई सह-अभियुक्तोंके निरन्तर सम्पर्कमें थी । न्यायाधीशने आगे कहा कि आवेदकके विरुद्ध लगाए गए आरोप गम्भीर थे।

न्यायमूर्ति यादवने उल्लेख किया कि यह सब प्रथम दृष्टया इङ्गित करता है कि सब कुछ एक सुनियोजित षड्यन्त्र अनुसार किया जा रहा था । उन्होंने कहा कि वजीराबाद रोडको अवरुद्ध कर दिया गया था और पुलिसद्वारा विरोध करनेपर बलका प्रयोगकर किसी भी सीमातक जानेके लिए सिद्ध थे।

पुलिसके आरोपपत्रमें ये भी कहा गया कि रतनलालकी हत्या एक षड्यन्त्रका भाग थी । २४ फरवरीको मौजपुर चौराहेके निकट हिन्दुओं और मुसलमानोंके मध्य झडपसे दोपहर १२ बजेके करीब हिंसा भडक उठी थी । एक वरिष्ठ अधिकारीने बताया कि ५००० लोग वहां जुट गए थे और

'पत्थरबाजी' भी हो रही थी। १ बजे एक बडी भीडने चांदबागमें डीसीपी और अन्य पुलिस अधिकारियोंपर आक्रमण कर दिया, जिसमें महिलाएं और बच्चे भी सम्मिलित थे।

दिन- प्रतिदिन हिन्दू विरोधी बढते ही जा रहे हैं, वे अपने षड्यन्त्रद्वारा कभी हिन्दुओंकी हत्या करते हैं, कभी हिन्दू मन्दिर तोड देते हैं तथा हिन्दुओंपर अत्याचार करते हैं, यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन इस देशमें हिन्दुओंकी संख्या ही अल्प हो जाएगी; अतः सभी हिन्दू एकजुट होकर इन हिन्दूद्रोहियोंका विरोध करें !

****

ईसाई महिलाओंकी याचिका सुनेगा सर्वोच्च न्यायालय, चर्चमें 'पापका प्रायश्चित'को चुनौती

केरलकी ईसाई महिलाओंद्वारा ८ जनवरीको एक याचिकामें 'मालंकारा ऑर्थोडॉक्स सीरियन चर्च'में अनिवार्य 'कन्फैशन'की (पापका प्रायश्चित) परम्पराको चुनौती दी, जिसे सर्वोच्च न्यायालयने सुनवाईके लिए स्वीकार कर लिया है। याचिकामें इसे धर्म और अभिव्यक्तिकी स्वतन्त्रताके संवैधानिक अधिकारोंके विरुद्ध बताया गया है।

याचिकाकर्ताओंका कहना था कि ईसाई महिलाओंके लिए 'कन्फैशन' अनिवार्य करना असंवैधानिक है; क्योंकि पादरियोंद्वारा इसे लेकर शारीरिक सम्बन्ध बनाने हेतु 'ब्लैकमेल' करनेकी घटनाएं सामने आई हैं। सर्वोच्च न्यायालयने इस विषयमें भारतके 'अटॉर्नी जनरल' केसी वेणुगोपालसे भी प्रतिक्रिया मांगी है।

याचिकार्ताओंके अधिवक्ता मुकुल रोहतगीने ध्यान दिलाया कि ऐसे विषयमें संवैधानिक अधिकारोंके साथ-साथ

यह भी देखना होगा कि क्या 'कन्फैशन' एक अनिवार्य धार्मिक प्रक्रिया हुआ करती थी। अधिवक्ता रोहतगीने आरोप लगाते हुए कहा कि कुछ पादरी महिलाओंद्वारा किए गए 'कन्फैशन'का अनुचित प्रयोग करते हैं, वो याचिकामें संशोधनकर ऐसी घटनाओंको जोडेंगे; क्योंकि 'कन्फैशन'को लेकर इससे पहले भी याचिकाएं आ चुकी हैं। कन्फैशनके अन्तर्गत लोग पादरीकी उपस्थितिमें अपने 'पापों'को लेकर प्रायश्चित करते हैं।

'NCW'भी यौन शोषणके आरोपोंके कारण इस प्रक्रियाको बन्द करनेका परामर्श दे चुका है।

केरलकी एक ननने अपनी आत्मकथामें आरोप लगाया था कि एक पादरी अपने कक्षमें ननोंको बुलाकर 'सुरक्षित शारीरिक सम्बन्ध'की 'प्रैक्टिकल क्लास' लगानेके 'बहाने' ननोंके साथ यौन सम्बन्ध बनाता था। उसके विरुद्ध लाख परिवाद (शिकायतें) करनेके पश्चात भी उसका कुछ नहीं बिगडा। 'सिस्टर' लूसीने लिखा था कि उनके कई साथी ननोंने अपने साथ हुई अलग-अलग घटनाओंके बारेमें बताया और वो सभी भयावह हैं।

सर्वोच्च न्यायालयद्वारा इस कुप्रथाको बन्द करवा देना चाहिए और शासनद्वारा दोषी पादरियोंको उचित दण्ड दिया जाना चाहिए और भारतसे बाहर करना चाहिए।

****

'जामिया'से वाल्मीकि समुदायके २३ कर्मचारियोंको निकाला, भोजनतकके पैसे नहीं, 'वीडियो'में भावुक याचिका

केवल हमारे वाल्मीकि समाजके ही सारे कर्मचारियोंको हटाया गया है। हमारे साथ यहां भेदभाव हो रहा है।

'जामिया'में हम बहुत व्यथित हैं। हमें ४-४ माहसे पारिश्रमिक नहीं मिला है। बच्चोंके भोजनतकके पैसे नहीं हैं।"

दक्षिण-पूर्व देहलीके ओखलामें स्थित 'जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी' एक बार पुनः विवादोंमें है। राजेश कुमार वाल्मीकि नामक एक व्यक्तिने 'वीडियो' बनाकर कहा है कि विश्वविद्यालयसे वाल्मीकि समुदायके २३ स्वच्छता कर्मचारियोंको निकाल दिया गया है। उन्होंने स्वच्छता कार्यालयसे 'वीडियो' बनाते हुए कहा कि उन्हें अधिकारियोंने बताया है कि मन्त्रालय से १३२ स्वच्छता कर्मचारियोंमेंसे २३ को निकालनेका आदेश आया है।

उन्होंने कहा, "केवल हमारे वाल्मीकि समाजके ही सारे कर्मचारियोंको हटाया गया है। हम १५-२० वर्षोंसे 'जामिया'में कार्य कर रहे हैं। 'कोरोना'के कठिन कालमें भी हमने यहांपर कार्य किया है। जब हटानेकी बात आती है, तो सबसे प्रथम नाम हम लोगोंका है यहां। हमारे साथ यहां भेदभाव हो रहा है।

१९२३ में वन्दे मातरमका विरोध हो या जामियाके संस्थापकोंमेसे एक मोहम्मद अली जौहरका भारतको 'दारुल इस्लाम' बनानेका स्वप्न, जामिया सदैव विवादोंमें ही रहा है। पिछले वर्ष 'सीएए'के विरोधके लिए भी जामिया केन्द्र बिन्दु था। उल्लेखनीय है कि जामियामें मुसलमानोंका ही वर्चस्व है और चुनाव हों तो ये लोग वाल्मीकि समुदायके साथ बहुत एकजुटता दिखाते हैं; परतु जहां दायित्व निभानेकी बात हो तो ये लोग मात्र अपने समुदायका ही हित देखते हैं। कुछ समय पहले हाथरसमें 'दलित' हितोंके लिए धरना देने और अभी किसानोंका भला चाहनेवाले 'दलितों'के कर्ता-धर्ता सभी कथित दलित नेता

इस घटनापर मौन हैं, इससे ही प्रमाणित हो जाता है कि हिन्दुओंमें विघटनके लिए किए जा रहे षड्यन्त्रकी सीमा कितनी व्यापक है ? (१०.०१.२०२१)

****

प्रदर्शनकारी किसानोंने इमरान खानकी की स्तुति, प्रधानमन्त्री मोदीको कहा 'कुत्ता'

'यूट्यूब चैनल' 'नेशनल दस्तक'पर एक दृश्यपट साझा किया गया, जो सामाजिक जालस्थानोंपर 'वायरल' हो रहा है। इसमें किसानोंको प्रधानमन्त्री मोदीके विरुद्ध विषवमन करते हुए देखा जा रहा है । एक प्रदर्शनकारी किसान तो पाकिस्तानके प्रधानमन्त्री इमरान खानकी स्तुति करता दृष्टिगत हो रहा है।

दृश्यपटके आरम्भमें एक व्यक्ति पारम्परिक सिख वेशभूषामें है। वह कहता है कि इमरान खान अपनी क्षमतासे प्रधानमन्त्री बने, जबकि नरेन्द्र मोदी जूठे चायके कप धो-धोकर भारतीय प्रधानमन्त्री बन गए हैं । वह करतारपुर साहब खोलनेका श्रेय भी इमरान खानको देता है, जो कि असत्य है। वह कहता है कि मृत्यु उपरान्त मोदीजी धरतीपर भूत बन भटकेंगे । एक अन्य व्यक्ति मोदीजीके विजयका कारण 'ईवीएम'को 'हैक' करना बताता है। यह आरोप पूर्वमें विपक्ष, विशेषकर कांग्रेस लगा चुकी है। प्रदर्शनकारी एक गधेका पुतला बनाकर उसके मुखपर मोदीजीके मुखका चित्र लगाकर एवं उसके शरीरपर अम्बानी, अडानीके चित्र लगाकर प्रदर्शन करते देखे गए। प्रदर्शनकारी मोदीजीको 'कुत्ता' कहते दृष्टिगत होते हैं । यह दृश्यपट सिंघु बॉर्डर'का है, जो 'यूट्यूब'पर ६ जनवरीको साझा किया गया है।

इससे पूर्व भी वाम मोर्चेकी किसान शाखाकी महिलाओंको मोदीजीके विरुद्ध गीत गाते देखा गया था । वे "मोदी मर जा तू, शिक्षा बेचके खा गया तू । रेल बेचके खा गया तू । देश बेचके खा गया तू, रे मोदी मर जा तू", जैसे अपशब्दयुक्त गीत गा रही थीं ।

शुक्रवार, ८ जनवरी २०२१ को 'इंडिया टुडे'की सम्पादक प्रीति चौधरीने कहा कि कुछ प्रदर्शनकारी वहां उपस्थित महिला पत्रकारोंका यौन उत्पीडन कर रहे हैं । उन्होंने कहा कि उनके स्वयंके नितम्बोंपर चुटकी काटी गई ।

वहां घटित हो रही घटनाएं अतिशय लज्जास्पद हैं । किसानोंको आगेकर विपक्षी, विशेषकर कांग्रेस और वामपन्थी इस आन्दोलनको अपना समर्थन देते हुए इसके समाधानके इच्छुक नहीं हैं । इनकी आन्तरिक इच्छा यह है कि शासन कृषि सम्बन्धित विधान निरस्त कर दे, तो ये 'सीएए' निरस्त करवाने हेतु आन्दोलन प्रखर कर देंगे । शासन कठोर होकर इस आन्दोलनपर प्रतिबन्ध लगाए, अथवा उच्चत्तम न्यायालय इसमें हस्तक्षेपकर इस समस्याका शीघ्र समाधान करे ! (१०.०१.२०२१)

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है । यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा । इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं ।

यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं। इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र, १५ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नामजप कब, कहां और कितना करें ? १९ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. योगनिद्रा २५ जनवरी रात्रि ७.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३

(9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है । इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915